DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Bara Chakia
BRABU— Muzaffarpur

B.A. (Hons.), part — I
Subject — Sanskrit
Paper — I

5×3 = 15 Marks

कारक सूत्र - व्याख्या

33. यस्य च भावेन भावलक्षणम् (2/3/37)

जिसकी क्रिया से दूसरी लक्षित होती है, उससे सप्तमी होती है अर्थात् जिस क्रिया से दूसरी क्रिया का काल ज्ञात हो, तो उस कालसूचक क्रिया के कर्ता, कर्म, विशेषण आदि सभी पदों में सप्तमी विभक्ति होती है। तात्पर्य यह कि जब एक कार्य के हो चुकने पर दूसरा कार्य होता है तब जो कार्य पहले हो चुका है उसके 'क्त' प्रत्ययान्त रूप में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा— उदिते सूर्ये अन्धकारः अपसरति (सूर्य के उगने अन्धकार हटता है), समाप्तायां कथायां सर्वे गृहं गताः (कथा समाप्त होने पर सभी घर गये) - यहाँ सूर्य का उगना और कथा का समाप्त होना — ये दोनों कार्य पहले होते हैं और ~~अन्धकार का~~ तत्पश्चात् अन्धकार का हटना और सभी लोगों का घर जाना - ये कार्य सम्पादित होते हैं और यहाँ क्त प्रत्ययान्त उदित एवं समाप्त के साथ सूर्य और कथायाः में भी सप्तमी हुई है।